है। इसलिए देश की राजनीति में सब दल चाहे राष्ट्रीय हों चाहे क्षेत्रीय हों, यदि कार्यक्रम में एकता है और आप भी मानते हैं कि आपके बीच में सिद्धांतों में एकता नहीं है लेकिन कार्यक्रम की एकता है, तो मिलकर काम करने का आधार है।

प्रधानमंत्री जी ने सुबह बहुत सी उपलब्धियां गिनाईं। अब अगर कौमन मिनिमम प्रोग्राम को देखें तो उसमें तीन महीने के भीतर जो काम होना चाहिए था वह नहीं हुआ, छः महीने के भीतर जो काम होना चाहिए था वह नहीं हुआ। उन सबको गिनाने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन अगर कार्यक्रम के आधार पर कुछ दल इकट्ठे होते हैं तो उनकी सफलता के लिए विश्वास का वातावरण बहुत आवश्यक है। इस विश्वास के अभाव के कारण ही यह संकट पैदा हुआ है। हम इससे शिक्षा लें, इससे पाठ पढ़ें और भविष्य में इस तरह का प्रयोग करते समय ऐसी भूलें न की जाएं, कम से कम इतना तो आज की घटना से सीखें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

[अनुवाद]

श्री पी.सी. थॉमस : महोदय, मैं बोलना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, कृपया हमें सहयोग दें। माफ कीजिए।

प्रधानमंत्री (श्री एच.डी. देवेगौड़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं इस सभा के माननीय सदस्यों द्वारा उठाई गई कुछ शंकाओं का समाधान करना चाहूंगा।

सर्वप्रथम, मैं माननीय सदस्यों को 21 तारीख को वित्त विधेयक पारित करने की सहमति देने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं सम्पूर्ण सभा को इस माह की 21 तारीख को वित्त विधेयक, लेखानुदान और विनियोग विधेयक पारित करने की सहमति देने के लिए हृदय से अपना धन्यवाद देना चाहूंगा।

रात्रि 10.00 बजे

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने एक वरिष्ठ नेता के रूप में कहा है कि समर्थन देने वाली पार्टी को उस रूप में नजर-अंदाज नहीं किया जाना चाहिए जैसे कि इस समय कांग्रेस (आई) के समर्थन से प्रशासन चलाने वाली पार्टी कर रही है। यह बहुत ही अच्छा सुझाव है। श्री संतोष मोहन देव ने बीच में बोलते हुए कहा था कि जब यह मुद्दा कांग्रेस के नेता और कांग्रेस संसदीय पार्टी दोनों द्वारा उठाया गया था तो संयुक्त मोर्चे से न तो कोई भी नेता उनसे मिला और न ही किसी ने उन्हें सन्तुष्ट करने का प्रयास किया। श्री संतोष मोहन देव ने यह टिप्पणी की है।

महोदय, विस्तार में जाने से पूर्व, मैं दो पत्रों, जो कि माननीय सदस्य श्री पी.आर. दासमुंशी के भाषण के अनुसार, मुझे भेजे गए थे, के बारे में बताना चाहूंगा। मुझे कोई पत्र नहीं मिला है। भारत के राष्ट्रपति ने आवरण पत्र और संलग्नक जो कि कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष ने 30 मार्च, 1997 को उन्हें भेजा था, उन्हें 31 मार्च, 1997 को मुझे भेजा था। समर्थन वापस लेने के लिए 30 मार्च, 1997 को राष्ट्रपति जी को भेजा गया पत्र 31 मार्च, 1997 को राष्ट्रपति जी ने मुझे भेजा था। तब तक मुझे कांग्रेस (आई) अध्यक्ष से कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ था। 30 मार्च, 1997 को मैं भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंम्ह राव से मिला था।

मेरे वित्त मंत्री ने 29 मार्च को दिल्ली से कलकत्ता के लिए रवाना होने से पहले मुझसे अनुरोध किया था कि कांग्रेस (आई) ने अपने पार्टी लेखे जांच अधिकारी को प्रस्तुत नहीं किए हैं। 31 मार्च अंतिम तारीख है। इस संबंध में अर्थदंड लगाने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं है। उन्होंने बताया कि वह कलकत्ता जा रहे थे और फिर गोआ जाएंगे और 31 मार्च को ही वापस लौटेंगे; इसलिए कृपया इस समस्या को सुलझाने का प्रयास करें। वित्त मंत्री जी ने मुझे यही बताया था। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि उन्होंने आवश्यक स्पष्टीकरण मांगने के लिए खजांची, श्री अहमद पटेल से संबंध स्थापित करने के सभी प्रयत्न किए। लेकिन वह नहीं मिले। इसलिए कृपया इस मुद्दे को सुलझाएं। 30 मार्च को मैं श्री पी.वी. नरसिम्ह राव से मिला क्योंकि उस समय वह पार्टी के अध्यक्ष और 1993-94 के लेखाओं के लिए जिम्मेदार थे। मैंने उनसे बातचीत की। उन्होंने सुझाव दिया कि वह इस बारे में चर्चा करने के लिए श्री प्रणव मुखर्जी को भेजेंगे। मैं वापस आया और श्री सीता राम केसरी जी पार्टी अध्यक्ष और कां.सं.पा. के नेता से फोन पर सम्बन्ध स्थापित किया। मैंने उन्हें बताया कि मैं उनसे मिलना चाहता हूं और कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करना चाहता हूं। कृपया मुझे बताएं कि वह कब मिल पाएंगे। उन्होंने मुझे 31 मार्च को 2 बजे मिलने के लिए समय दिया। मेरे कुछ नैतिक मूल्य हैं। मैं यहां इस पद की खोज में, किसी आशा, आकांक्षा से नहीं आया हूं। मैंने मुख्य मंत्री का पद छोड़कर इस देश का प्रधानमंत्री बनने की कभी इच्छा नहीं की थी। मुझे जोड़-तोड़ वाली राजनीति करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस देश के लोग राजनैतिक दृष्टि से बहुत जागरूक हैं, वे इस बात से परिचित होंगे। समर्थन वापस लेने के लिए पत्र प्रस्तुत करने का समय अपराह्न 12.40 बजे चुना गया था और उन्होंने मुझे मिलने के लिये अपराह्न 2.00 बजे का समय दिया। क्या श्री संतोष मोहन देव वहां नहीं थे जब मैं उनके अध्यक्ष से मिला था? मैं उनसे बारह बार मिला हूं।

आरोप यह लगाया गया है कि मैं केवल श्री पी.वी. नरसिम्ह राव जी से मिलता रहा। मैं पीठ में छुरा भोंपने वालों में से नहीं हूं। श्री पी.वी. नरसिंह राव इस देश के प्रधान मंत्री थे। जी हां,

[श्री एच.डी. देवेगौड़ा]

उस दिन मैं यहां मौजूद था जब उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया था और मैंने उनके विरुद्ध वोट डाली थी। उस दिन उन्होंने किसी भी तरह अथवा कोई भी तरीका अपनाकर सरकार बनाने की कोशिश की थी। आज वे मित्र जो इस देश में धार्मिक उपदेश और नैतिक शिक्षा देना चाहते हैं, जो श्री नरसिम्ह राव के विरुद्ध अपने उद्देश्य सिद्ध करना चाहते हैं, क्या उनकी सरकार में अपने पद का सुख नहीं भोग रहे थे। आज, प्रत्येक श्री नरसिम्ह राव के विरुद्ध यह कहकर उंगली उठाना चाहता है कि देवेगौड़ा श्री नरसिम्ह राव के हितों की रक्षा कर रहे हैं। यदि वह बीमार हैं और अस्पताल में हैं और यदि देवेगौड़ा उन्हें देखने जाते हैं तो वह उन्हें अधिक सम्मान और आदर दे रहे हैं क्योंकि वह अध्यक्ष का पद खो बैठे हैं, कां.सं.पा. के नेता का पद खो बैठे हैं। मैं उन्हें किसी प्रकार से छोटा दिखाने वालों में से नहीं हूं। उन्होंने देश के लिए बहुत कुछ किया है। चाहे वह अपने पद पर विभिन्न राजनैतिक तरीकों को अपनाकर बने रहे अथवा नहीं, मैं उनके विस्तार में नहीं जाना चाहता। उन्होंने देश को आर्थिक संकट से उबारा। मैं सभी का नाम लेकर कुछ नहीं कहने वाला लेकिन मित्रों, आप में से कुछ ने किस प्रकार उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश की है, मैं इसे जानता हूं। यद्यपि यह मेरी चिंता का विषय नहीं है, यद्यपि मैं जानता हूं कि आज मैं पद-त्याग करने वाला हूं लेकिन इस देश में मैत्री बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है। श्री नरसिंह राव जी को इन शब्दों से परिचित होना चाहिए। वह अपने अंतिम दिन व्यतीत कर रहे हैं इसलिए उन्हें इन शब्दों से अवश्य ही परिचित होना चाहिए। ये वे लोग हैं जिन्होंने उन्हें छुरा घोंपा है। मैं उन्हें छुरा घोंपने नहीं जा रहा हूं। जिस दिन उन्होंने कां.सं.पा. के नेता के पद से त्याग-पत्र दिया था, वह बिल्कुल अकेले थे। मैं उनके घर यह जानने के लिए गया कि ऐसा क्यों हुआ?

जी हां, मैं श्री चन्द्र शेखरजी का आदर करता हूं। मेरी श्री चन्द्रशेखर जी से मित्रता बहुत पुरानी है। मेरा उनके साथ पिछले 20 वर्षों से सम्बन्ध रहा है। वह एक वरिष्ठतम नेता हैं और मैं उनका आदर करता हूं। चाहे मैं किसी पद पर था या नहीं, मैं उनके घर जाया करता था। उनके घर जाना पाप है, श्री नरसिंह राव के घर जाना पाप है, श्री शरद पवार जी से मिलना पाप है, लेकिन उनके अध्यक्ष से बारह बार मिलना पाप नहीं है। मैंने अपने जीवन में किसी की उपेक्षा नहीं की है। क्या मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के घर नहीं गया? क्या मैं श्री लालकृष्ण आडवाणी जी के घर नहीं गया? हमारे सार्वजनिक जीवन में कुछ मौलिक शिष्टाचार होने चाहिएं। इसका यह मतलब नहीं है कि हम पद पर बने रहने के लिए किसी को खुश रखने की कोशिश कर रहे हैं अथवा चापलूसी कर रहे हैं। आपको अपने से बड़ों का आदर करने का प्रयास करना चाहिए। जिस पद पर मैं आज हूं एक घंटे तक और हूं, वह उच्चतम पद है। पंडित जवाहरलाल नेहरू जो कि विश्व के सबसे बड़े नेताओं में से एक थे, यहां बैठते थे और प्रधान मंत्री के रूप में अपनी भूमिका निभाते थे। भाग्य ने मुझे यहां ला पटका और मुझे इस कुर्सी पर बिठा दिया। जब इस सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष, श्री शिवराज पाटिल बोल रहे थे तो मैं उनका भाषण सुन रहा था। उन्होंने जो कुछ बातें कहीं मैं उनकी प्रशंसा करता हूं।

महोदय, मैं कुछ विस्तार से बोलना चाहूंगा क्योंकि इस सभा में यह मेरा अंतिम भाषण है। मैं दूसरे सदन में चला जाऊंगा। मुझे वहां पांच वर्ष तक रहना है। ...*(व्यवधान)* मेरा सभी सदस्यों, वरिष्ठ नेताओं से अनुरोध है कि वह मुझे सहयोग दें। मैंने इस सभा में कई सदस्यों द्वारा बहुत गलत बोलने पर भी उन्हें कभी बीच में नहीं टोका। मैंने ऐसा कभी नहीं किया।

श्री दासमुंशी जी ने मेरे बंगलौर जाने और वापस लौटने की बात की।

श्री हन्नान मोल्लाह : अध्यक्ष महोदय ध्वनि व्यवस्था में कुछ खराबी है। इससे कुछ सुन पाने में कठिनाई हो रही है।

अध्यक्ष महोदय : मैंने उन्हें इसकी जांच करने के लिए कहा है। इसकी जांच की जा रही है। कृपया धैर्य रखें।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : श्री दासमुंशी, आप मेरे अच्छे मित्र हैं। आप मुझे कलकत्ता ले गए। कृपया अपने दिल को टटोलकर मुझे बताइए - कि पिछले दस माह में इस प्रधान मंत्री का कार्यनिष्पादन कैसा रहा। किस प्रधान मंत्री ने सात दिन तक लगातार उत्तर-पूर्व के राज्यों का दौरा किया है? युवा कांग्रेस के दिनों से आप यहां हैं। आप कट्टर कांग्रेसी हैं। मुझ आपकी संगठन के प्रति निष्ठा पर कोई प्रश्न नहीं उठाना है। लेकिन आप सच-सच बताइए। अपनी अन्तरात्मा की आवाज को न दबाएं। फिरोज गांधी जैसे भी व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने अपने ससुर के प्रधान मंत्री होते हुए भ्रष्टाचार के आरोपों को उद्घाटित किया था। यदि आप महसूस करते हैं कि समर्थन वापस लेने के आपके अध्यक्ष के निर्णय से तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र को बल मिलने वाला है तो मैं इसका स्वागत करता हूं। मुझे कोई खेद नहीं है। लेकिन मैं स्पष्ट रूप से आपको बताना चाहूंगा कि मैंने पिछले दस माह में अपने कर्त्तव्यों को निभाने के अतिरिक्त कुछ और नहीं किया है ...*(व्यवधान)* मैं उस पर आ रहा हूं। कृपया धैर्य रखें।

महोदय, मेरे धर्मनिरपेक्ष होने पर संदेह किया गया। यह कहा गया कि कांग्रेस कार्यकारी समिति यह नोटकर खेद व्यक्त करती है कि संयुक्त मोर्चा सरकार धर्मनिरपेक्ष ताकतों को एकजुट रखने के लिए आवश्यक नेतृत्व प्रदान करने में और साम्प्रदायिक ताकतों

को दबाने में असफल रही है। क्या पंजाब में उनकी हार के लिए मैं जिम्मेदार हूं? नगर-निगम के चुनावों अथवा महाराष्ट्र में स्थानीय निकायों के चुनावों में उनकी हार के लिए क्या मैं जिम्मेदार हूं? क्या मेरे गृह राज्य में मेरे द्वारा खाली किए गए स्थान पर जहां उप-चुनाव में भा.ज.पा. की जमानत तक रद्द हो गई और कांग्रेस की जीत हुई, के सिवाय सभी उप-चुनावों में कांग्रेस उम्मीदवारों की हार के लिए मैं जिम्मेदार हूं? मैं यह नहीं कहना चाहता कि भा.ज.पा. और कांग्रेस मिल गए हैं। भा.ज.पा. को 1996 में संसदीय चुनावों में 23,000 वोट मिले और विधान सभा के चुनावों में 27,000 वोट मिले। उनकी जमानत जब्त हो गई और वे धर्म निरपेक्षता के विरुद्ध लड़ाई में एक साथ आगे बढ़े।

श्री पी.आर. दासमुंशी आपने यह राय जानकारी के अभाव के कारण बनाई होगी। मैं इस कार्यकारी समिति के संकल्प की मंशा के बारे में पूछना चाहूंगा। श्री मुलायम सिंह जी यहां मौजूद हैं। राज्य सभा के लिए तीन उप-चुनाव हुए। कांग्रेस को 30 वोट मिले, बसपा को 66 और जनता दल को आठ वोट मिले। यदि उन्होंने ये 104 वोट नहीं काटी होतीं तो क्या जनता दल, कांग्रेस और ब.स.पा. सहित इन तीन पार्टियों के लिए यह संभव हो सकता था कि वे भा.ज.पा. के तीन अधिकृत उम्मीदवारों को हरा पातीं। आप मुझे बताएं। समर्थन वापस लेने पर खेद व्यक्त न करें। समर्थन वापस लेने पर चिंतित न हों। इसके लिए अब कोई लीपा-पोती न करें। यह संभव नहीं है। देश को असलियत का पता लगने दें।

मैं इस सभा में पुन: मीडिया द्वारा - संपादकीय कालम अथवा 'संपादक के नाम पत्र' में की गई प्रशंसा को उद्धृत नहीं करना चाहता। अब मैं सरकार के कार्य-निष्पादन और सरकार की कार्य कुशलता के बारे में कांग्रेस (आई) अध्यक्ष द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों पर आ रहा हूं।

सर्वप्रथम, मैं कुछ बातों को स्पष्ट करना चाहूंगा क्योंकि सुबह मैं राजनैतिक भाषण देना नहीं चाहता था। कुछ लोगों, की यह धारणा थी कि मैं अवसादपूर्ण मन-स्थिति में हूं। नहीं मैंने श्री चन्द्र शेखर से प्रशिक्षण लिया है। मुझे कभी भी पद की कोई चिंता नहीं होगी। मैंने उनकी सलाह के विरुद्ध तीन-बार त्याग-पत्र दिया है। आज, मैं इसे स्पष्ट करना चाहूंगा कि जिस दिन मुझे राष्ट्रपति जी के कार्यालय से समर्थन वापस लिए जाने का पत्र मिला था, मैंने तभी अपना त्याग-पत्र दे दिया होता। लेकिन, तुरन्त अगले दिन, संयुक्त मोर्चे के सभी दलों के नेता यहां एकत्र हुए और उन्होंने कहा, "नहीं, त्याग-पत्र नहीं देना चाहिए। आपको सभा के समक्ष जाना चाहिए। हमें जांच करनी चाहिए और देखना चाहिए कि कौन कितने पानी में है।" संयुक्त मोर्चे के इस निर्णय के सामने मैंने अपना सिर झुका लिया। उनके समर्थन के कारण ही मुझे नेता चुना गया था और मैं कांग्रेस के समर्थन से सरकार चला रहा था। मेरी यही पृष्ठभूमि है।

पिछले ग्यारह माह में, मैंने कांग्रेस को नीचा दिखाने के लिए कभी भी किसी सार्वजनिक सभा में कुछ नहीं कहा। मैंने करीब 66 बैठकों को उत्तर प्रदेश में सम्बोधित किया होगा जहां लोक सभा चुनावों में भा.ज.पा. को 236 विधान सभा क्षेत्रों का स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ था। विधान सभा चुनावों में उन्हें लगभग 176 सीटें प्राप्त हुई। श्री पी.आर. दासमुंशी जी क्या यह कोई उपलब्धि नहीं है?

श्री पी.आर. दासमुंशी : प्रधानमंत्री जी, आपने उस समय धर्म-निरपेक्ष ताकतों को एकजुट करने का प्रयत्न नहीं किया।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : आपको पता नहीं है। इसलिए आप ऐसा कह रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

मैं सभी बातों को खुलासा नहीं करना चाहता क्योंकि यदि मैं सभी बातों को विभिन्न अवस्थाओं में मैंने क्या किया, कहते हुए बताउंगा तो यह मेरी दृष्टि में अनैतिक होगा। ...*(व्यवधान)*

श्री पी.आर. दासमुंशी : मैंने पूरी तरह से आपको दोषी नहीं ठहराया है ....*(व्यवधान)*

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : श्री पटवा, कृपया मुझे बीच में मत टोकिए।

अध्यक्ष महोदय, जब अन्य लोग बोल रहे थे, तो मैंने उन्हें बीच में नहीं टोका। अब उन्हें मुझे, प्रधान मंत्री के रूप में, जाने वाले प्रधान मंत्री के रूप में, इस माननीय सभा में अपने विचार व्यक्त करने का मौका देना चाहिए।

महोदय, किसी ने मुझे बताया था, शायद मेरे गृह मंत्री ने मुझे बताया था कि आरोप लगाया गया है कि प्रधान मंत्री कांग्रेस पार्टी का विभाजन करना चाहते थे। श्री माधवराव सिंधिया जब कांग्रेस पार्टी में शामिल होना चाहते थे तब वह मेरे पास आए थे क्योंकि उस समय वह संयुक्त मोर्चे में थे। क्या मैंने उन्हें कांग्रेस में शामिल होने तथा उसे सुदृढ़ बनाने के लिए नहीं कहा था? कृपया उन्हें बताने दें। ...*(व्यवधान)* कृपया मुझे बोलने दीजिए।

श्री माधव राव सिंधिया (ग्वालियर) : आप बहुत ही सज्जन आदमी हैं। लेकिन चूंकि आपने मेरा नाम लिया है तो मैं स्पष्ट करना चाहूंगा कि मेरा आपके साथ बहुत ही अच्छा तालमेल रहा है। लेकिन मैं आपके पास आपको शिष्टाचार के नाते बताने आया था कि मैं कांग्रेस पार्टी में शामिल हो रहा हूं। मैंने आपकी अनुमति नहीं मांगी थी।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : इसमें मेरी अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जब आप आए थे और आपने यह बात बताई तो, आपने राजनैतिक मूल्यों और उनकी गरिमा को बनाए रखा। उस समय आप संयुक्त मोर्चे में थे और आप आए और मुझे इसकी सूचना दी। मैंने क्या कहा था? मैंने कहा था : "कृपया जाइए और कांग्रेस पार्टी को मजबूत बनाइए; मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।" क्या मैंने ऐसा नहीं कहा था?

श्री माधवराव सिंधिया : मैं आपकी बात से सहमत हूं। आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। मैंने जब इसकी सूचना आपको दी थी, आपने कहा था, "जरूर, निश्चित रूप से।"

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : धन्यवाद।

श्री एन.डी. तिवारी और श्री अर्जुन सिंह जी ने जब मुझसे कहा कि वे कांग्रेस पार्टी में वापस जा रहे हैं क्योंकि श्री पी.वी. नरसिंह राव को कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष के पद से हटा दिया गया है। मैंने कहा था, "जाइए, आपका ऐसा करने के लिए स्वागत है और इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" क्या मैंने कांग्रेस पार्टी को विभाजित करने का प्रयत्न किया है? कोई भी कह सकता है।

महोदय, एक अन्य आरोप यह लगाया गया है कि देवेगौड़ा कांग्रेस पार्टी के महत्व को कम करना चाहते थे। जब श्री शरद पवार जी ने मुझसे अपने निर्वाचन क्षेत्र में कुछ कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए कहा था तो क्या मैंने उनसे 'नहीं' कहा था। यहां तक कि श्री संतोष मोहन देव के निर्वाचन क्षेत्र में, भूतपूर्व अध्यक्ष के निर्वाचन क्षेत्र में जब भी मुझे बुलाया गया मैं वहां गया। मैं अपनी पार्टी के कार्यकर्त्ताओं की बैठक में नहीं गया क्योंकि मैं कांग्रेस पार्टी और मेरी पार्टी के कार्यकर्ताओं के बीच मनमुटाव नहीं चाहता था। मैं जब भी स्थानीय संसद सदस्यों द्वारा निर्धारित सरकारी कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए कांग्रेस शासित राज्यों में गया, मैं कभी भी किसी पार्टी की बैठक में उपस्थित नहीं हुआ। मैंने किस प्रकार कांग्रेस पार्टी के महत्व को कम किया है? मैं नहीं जानता कि मैंने क्या पाप किया है?

महोदय, सुबह विपक्ष के माननीय उप नेता श्री जसवंत सिंह जो ने बहुत ही शालीनता से उस भाषा का उल्लेख करने का प्रयत्न किया था जो कि प्रधान मंत्री के विरुद्ध कांग्रेस (आई) अध्यक्ष द्वारा प्रयोग की गई थी। जब प्रेस वालों ने इसके बारे में पूछा तो मैंने कहा कि "इस पर ध्यान न दें।" आज मैं इस सभा के माध्यम से इस राष्ट्र को वह भाषा बताना चाहूंगा जो माननीय कांग्रेस (आई) अध्यक्ष जो कि नेता बनने की इच्छा रखते हैं, ने प्रयोग की थी। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। यदि सभा ऐसा चाहती है, यदि मेरे सभी मित्र, कांग्रेस पार्टी के मेरे मित्र चाहते हैं, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

महोदय, मुझे हिन्दी के शब्द 'निकम्मा' का अर्थ मालूम नहीं है।

उन्होंने कहा था :

"आप मूर्ख कायर और शक्तिहीन हैं। जरा मैदान में आओ तो देखते हैं कि शक्तिशाली कौन है।"

उन्होंने हिन्दी में कहा था :

[हिन्दी]

"यह व्यक्ति निकम्मा और कम्युनल है।"

[अनुवाद]

यह आदमी केवल निकम्मा ही नहीं है बल्कि साम्प्रदायिक भी है।

पिछले दस माह में इस निकम्मे प्रधान मंत्री ने जो कुछ किया, उसे मैं इस सभा को तथा इस सभा के माध्यम से राष्ट्र को बताना चाहता हूं। मैं माननीय अध्यक्ष का ध्यान 'द हिन्दू' समाचार पत्र के संपादकीय में छपे एक सम्पादकीय की ओर दिलाना चाहूंगा। आप सबने इसे देखा है। इसमें लिखा है :

"श्री देवेगौड़ा के शासन काल जैसा पिछले कई दशकों में कभी नहीं हुआ - मंत्रालयों को पर्याप्त स्वायत्तता वापस मिली। प्रधान मंत्री कार्यालय की भूमिका में पर्याप्त कमी आई। निर्णय लिए जाने वाले अनेक क्षेत्रों जैसे, विदेशी निवेश, को उद्योग को वापस सौंप दिया गया।"

मैंने प्रधान मंत्री कार्यालय की शक्तियों को प्रत्यायोजित किया क्योंकि मैं निकम्मा हूं, निकम्मा और मूर्ख प्रधान मंत्री हूं ...*(व्यवधान)* कांग्रेस कार्यकर्त्ता नहीं हैं। वे अखिल भारतीय कांग्रेस (आई) अध्यक्ष हैं। वे उस पद पर आसीन हैं जहां श्री मोतीलाल नेहरू, पं. जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती इन्दिरा गांधी जैसे महान लोग पदासीन रहे ...*(व्यवधान)*

महोदय, 'वाशिंगटन पोस्ट' में लिखा है :

"भारत ने नए प्रकार के नेतृत्व का प्रदर्शन किया है जिसकी दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप में अत्यधिक आवश्यकता है। लेकिन अब भारत के प्रधान मंत्री श्री एच.डी. देवेगौड़ा की पहल पर गंगा जल बंटवारे के संबंध में बंगलादेश और भारत का विवाद समाप्त किया जा रहा है। यदि गंगा समझौता श्री

देवेगौड़ा के नेतृत्व का एक उदाहरण है तो आगे देखते हैं क्या होता है।''

यह 'वाशिंगटन पोस्ट' में लिखा है। मैं पूरा संपादकीय लेख नहीं पढ़ने जा रहा हूं।

महोदय, एक मूर्ख और निकम्मे प्रधान मंत्री ने राष्ट्र के लिए कुछ तो करने का प्रयत्न किया है। मैं दस माह तक निष्क्रिय नहीं बैठा रहा। मैंने इस सभा में विश्वास मत के उत्तर में जो कहा था, उसे याद दिलाना चाहूंगा। मैं जानता हूं जो होने वाला है। चाहे मैं पांच दिन के लिए रहूं अथवा पांच माह के लिए अथवा पांच वर्ष के लिए, यह मेरी चिंता का विषय नहीं है। मैं प्रत्येक मिनट राष्ट्र के लिए कार्य करूंगा। यह मैंने प्रण लिया है। जी हां, मैं दिन में 18-19 घंटे काम करता हूं। मुझे इस पर गर्व है। मुझे इस पद को छोड़ते हुए कोई खेद नहीं है। मुझे कोई खेद नहीं है। मैंने एक मिनट भी बेकार नहीं गंवाया है। जब भी मुझे अवसर मिला मैंने अपनी तरफ से अच्छे से अच्छा कार्य किया।

वर्तमान कांग्रेस (आई) अध्यक्ष से किसी प्रमाणपत्र की कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे किसी प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं है। मैंने अपने जीवन काल में दस चुनाव लड़े हैं। क्या उन्होंने कभी कोई सीधा चुनाव लड़ा है? मैंने राज्य सभा से चुना जाना क्यों चाहा। मैं इसे स्पष्ट करना चाहूंगा। मुझे कांग्रेस के साथ छोड़ देने की आशा थी क्योंकि श्री चन्द्र शेखर इसके शिकार रहे हैं, श्री वी.पी. सिंह इसके शिकार रहे हैं मुझे इस सबके बारे में जो पिछले समय में हुआ है, जानकारी थी। श्री नरसिंह राव इसके शिकार हुए। मैं सभी कुछ बताने जा रहा हूं - कि किस प्रकार श्री मोरारजी देसाई जी के साथ कांग्रेस ने क्या व्यवहार किया और किस प्रकार श्री राज नारायण जो कि स्वास्थ्य मंत्री थे और जो श्रीमती गांधी के विरुद्ध लड़े, को जनता दल को तोड़ने के लिए प्रयोग किया गया। आप यह जानते हैं, मैं इस बारे में जानता था और प्रत्येक इस बारे में जानता था। मैं सारा खेल जानता हूं।

जब तक श्री नरसिंह राव अध्यक्ष रहे, कोई परेशानी नहीं हुई। जिस दिन श्री सीताराम केसरी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष बने, मैंने उन्हें दोपहर के भोजन के लिए बुलाया था। मैंने आपके अध्यक्ष की कभी उपेक्षा नहीं की। मेरे घर में मेरी उनसे दो घंटे तक बातचीत हुई। उन्होंने मुझे वचन दिया और उन्होंने मुझे वरिष्ठ राजनेता के रूप में सलाह भी दी। परन्तु चौथे दिन मेरे एक मुख्य मंत्री डा. फारूख अब्दुल्ला, जिनके सहयोगी प्रो. सैफुद्दीन सोज मेरे मंत्रिमंडल में हैं, जब श्री सीता राम केसरी जी से मिलने गए, तो उन्हें कहा गया कि वे संयुक्त मोर्चे सरकार में शामिल न हों क्योंकि मैं समर्थन वापस लेने वाला हूं। चार दिन के भीतर ऐसा हो गया।

मैं जब इस सभा में आया था, मैंने भगवान का नाम लेकर शपथ ग्रहण की थी। श्री नरसिंह राव जी आप बहुत से कड़वे घूंट पी सकते हैं, क्योंकि आप एक सज्जन व्यक्ति हैं। अब मैं समर्थन देने वाली पार्टी के कुछ माननीय सदस्यों द्वारा उठाई गई कम से कम कुछ शंकाओं के बारे में स्पष्ट करना चाहूंगा। मेरे ऊपर आरोप लगाया गया है कि मैंने श्री सीताराम केसरी जी के अध्यक्ष बनने के बाद उनकी उपेक्षा की है। यह सच नहीं है बल्कि इसके पीछे कुछ और है। एक शीर्षक छपा है, जिसमें ठीक कहा गया है, भारत के बुजुर्ग जल्दी में : 'अभी अथवा कभी नहीं।' यह किसी भारतीय समाचार पत्र में नहीं छपा। यह 'लंदन टाइम्स' में छपा था।

यह कहा गया है कि हम पद-लोलुप हैं। लेकिन यहां प्रश्न सम्मान का है। हम सत्ता के भूखे नहीं हैं। कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष का पद एक ऊंचा पद है। कांग्रेस (आई) 105 वर्षों के पृष्ठभूमि वाली एक ऐतिहासिक राजनैतिक पार्टी है ...*(व्यवधान)* ठीक है, इसकी 111 अथवा 113 वर्ष पुरानी पृष्ठभूमि है ...*(व्यवधान)* यह वह स्थान है जहां पंडित जवाहर लाल नेहरू बैठा करते थे और आज मैं इस पर आसीन हूं। मैं इसे कांग्रेस कहूंगा, कांग्रेस (आई) नहीं। कांग्रेस पार्टी वह पार्टी है जिसने स्वतंत्रता प्राप्त कराने में देश की सेवा की। इसने देश को चलाने, देश का विकास करने में, देश की सेवा की। सभी दृष्टिकोणों से इसने देश की सेवा की। अध्यक्ष बन जाना ही बड़ी बात नहीं है; सम्मान पाना प्रमुख है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के पद का कोई मान नहीं है, कोई दर्जा नहीं है। यदि वह यहां इस पद पर बैठते हैं तभी केवल उन्हें सम्मान और दर्जा प्राप्त होगा। यही कारण है कि यह कहा गया है कि बुजुर्ग नेता जल्दी में है ...*(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। मैं आपकी व्यवस्था चाहता हूं ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया सुनने का धैर्य रखें।

... *(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : मैं आपसे स्पष्टीकरण चाहता हूं ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप इसमें टांग क्यों अड़ा रहे हैं? कृपया शान्त रहें। मैं इससे निपट लूंगा। आपको इसमें निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं है।

प्रो. पी.जे. कुरियन, आपका व्यवस्था का प्रश्न क्या है? किस नियम के अन्तर्गत आप इसे उठा रहे हैं?

प्रो. पी.जे. कुरियन : जी हां। माननीय प्रधान मंत्री ने यह कहा है।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, 'जी, हां' कोई कारण नहीं है, 'जी, हां' कोई नियम नहीं है।

प्रो. पी.जे. कुरियन : माननीय प्रधान मंत्री ने यह कहा है ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैं इसे नहीं मानता क्योंकि जब आप कहते हैं ''उन्होंने ऐसा कहा है'', यह कोई नियम नहीं है।

... *(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : कृपया, मेरी बात सुनिए।

अध्यक्ष महोदय : मैंने अपनी व्यवस्था दे दी है। आपने कहा है : ''उन्होंने यह कहा है'' यह कोई नियम नहीं है।

प्रो. पी.जे. कुरियन : कृपया मुझे अनुमति दें। मैं आपसे मेरी बात सुनने के लिए अनुरोध कर रहा हूं। मैं केवल एक मिनट लूंगा ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया इसे सुनने का धैर्य रखिए। प्रधान मंत्री जी को इस पर बैठ जाना चाहिए।

... *(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : माननीय प्रधान मंत्री जी ने कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष का नाम लिया है। मैं इस पर आपका स्पष्टीकरण और विनिर्णय चाहता हूं ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : जब तक कोई सदस्य बैठ नहीं जाता, मैं कुछ नहीं कर सकता। प्रधान मंत्री बैठ नहीं रहे हैं। मैं कुछ नहीं कर सकता। जब तक वह बैठ नहीं जाते, मैं आपको अनुमति नहीं दे सकता।

... *(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : उन्होंने कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष का नाम लिया है जो कि इस सभा के सदस्य नहीं है। आपका इस पर विनिर्णय क्या है? मैं केवल आपके विनिर्णय के बारे में पूछ रहा हूं। क्या प्रधान मंत्री कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष का नाम ले सकते हैं, जो इस सभा के सदस्य नहीं हैं? क्या आप नहीं समझते कि यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है? ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : नहीं।

... *(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : भूतपूर्व अध्यक्षों ने इस सभा में अनेक विनिर्णय दिए हैं। ऐसा व्यक्ति जो इस सभा का सदस्य नहीं है, उसका नाम नहीं लिया जाना चाहिए। आपका विनिर्णय क्या है?

अध्यक्ष महोदय : आप ऐसा नहीं कह सकते।

प्रो. पी.जे. कुरियन : माननीय अध्यक्ष को इस पर विनिर्णय देना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : विनिर्णय किस पर? मैं आपसे पूछ रहा हूं: आपस किस नियम के अन्तर्गत अपना व्यवस्था का प्रश्न उठा रहे हैं? आपने कहा : 'जी हां' मैंने कहा, 'जी, हां' यह नियम नहीं है। मैं यह नहीं मानता।

... *(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : क्या मैं आपको कुछ बता सकता हूं? ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया इस प्रकार का व्यवहार नहीं करिए।

... *(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : मेरा कहना है कि वह शब्द प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए जो कि प्रधान मंत्री बार-बार प्रयोग कर रहे हैं, जबकि वरिष्ठ सदस्य इस सभा में नहीं आ सकते हैं और अपने पक्ष में कुछ नहीं कह सकते ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैं इसे नहीं मानता। इसमें व्यवस्था का कोई प्रश्न नहीं है।

... *(व्यवधान)*

श्री चन्द्र शेखर (बलिया) : अध्यक्ष महोदय, जिस व्यक्ति ने ऐसा पत्र लिखा, जिससे इस देश में अस्थिरता पैदा हो गई, उसने एक राजनैतिक अपराध किया है। ...*(व्यवधान)* मैं अपने विचार व्यक्त कर रहा हूं। ...*(व्यवधान)*

प्रो. पी.जे. कुरियन : माननीय प्रधान मंत्री जी ने 'बूढ़ा आदमी' शब्द का प्रयोग किया है। क्या ऐसे शब्द संसद में प्रयोग किए जाने चाहिएं? मुझे केवल इस शब्द से आपत्ति है। ...*(व्यवधान)*

श्री चन्द्र शेखर : अगर सिर्फ यही आपत्ति है तो ठीक है। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : चन्द्र शेखर जी कृपया बैठ जाइए।

प्रो. कुरियन जी कृपया बैठ जाइए। आप इस तरह खड़े नहीं हो सकते। अगर आप अध्यक्ष की बात नहीं मानते तो

क्या मैं आपसे अपने नेता की बात मानने का अनुरोध कर सकता हूं।

प्रो. पी.जे. कुरियन : मैं हमेशा आपकी बात मानता हूं।

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपने नेता की बात मानिए। वह अधिक महत्वपूर्ण है।

प्रो. पी.जे. कुरियन : आप यह क्यों नहीं देखते कि प्रधानमंत्री जी किसी वरिष्ठ व्यक्ति को एक 'बूढ़ा आदमी' कह रहे हैं? *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप इस मामले में हस्तक्षेप क्यों कर रहे हैं?

अब कैमरे चालू किए जाएं।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : मैं केवल एक बात कहता हूं। भारत के राष्ट्रपति से प्राप्त पत्र में मेरे विरुद्ध और संयुक्त मोर्चा सरकार के विरुद्ध बहुत सारे आरोप लगाए गए हैं। मुझे उन सभी का जवाब देना चाहिए। यह किसी व्यक्ति पर प्रहार करने का प्रश्न नहीं है। मेरी सरकार के विरुद्ध लगाए गए आरोपों की स्थिति स्पष्ट करना मेरी जिम्मेवारी है। वह पत्र मेरे पास है और मैं उन सभी बातों का उत्तर दे रहा हूं। उसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहूंगा। अगर मैं अपमान करना चाहता तो मेरे लिए यह कोई आवश्यक नहीं था कि इसके लिए बारह महीने लगाता। आपके लिए मेरे मन में बहुत आदर है, कुरियन जी। परन्तु यह निकम्मा और अकम्मा क्या है?

माननीय गृह मंत्री जी, समर्थन देने वाले दल से कुछ स्पष्टीकरण चाहते हैं, वे चाहते है कि उस पार्टी के माननीय सदस्य स्पष्टीकरण दें। वह कह रहे थे कि उन्होंने डेढ़ घंटे तक उनके नेता से बात की परन्तु कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा उन्हें केवल यही तर्क दिया गया था, "आपके नेता को पद त्याग देना चाहिए।" जब तक मैं पद नहीं छोड़ता वे कैसे पद पर आ सकते हैं। मैं समझता हूं कि माननीय गृह मंत्री जी इतना समझ सकते हैं। इसलिए समर्थन देने वाले दल से किसी प्रकार के स्पष्टीकरण की आवश्यकता कहां थी?

उन्होंने कुछ भी नहीं किया है। मैं बहुत ही स्पष्ट कहना चाहता हूं कि पिछले 10 महीनों में कांग्रेस पार्टी के किसी सदस्य ने उस सदन में या सदन से बाहर आलोचना नहीं की है – मैं उनका आभारी हूं। एकमात्र इच्छा यह है कि कोई और इस कुर्सी पर बैठे और मैं इसे खाली कर दूं। इसके पीछे यही रहस्य है। जब उन्होंने माननीय गृह मंत्री को यह कहा कि "आपके नेता को प्रधान मंत्री का कार्यालय छोड़ देना चाहिए।" तो कोई गलत नहीं कहा था। कांग्रेस अध्यक्ष ने गृहमंत्री को यह समझाने की कोशिश की थी तो मुझे इसमें कोई गलती नहीं लगी। उन्होंने इस मामले से मुझे अवगत नहीं करवाया; उन्होंने इस मामले के बारे में सदन को सूचित किया था।

माननीय विदेश मंत्री जी ने हमारे विदेशी मामलों, विदेश नीति और जो कुछ हमने किया उसके संबंध में एक संक्षिप्त भाषण दिया है। उन्होंने हमारी सरकार की कुछ उपलब्धियों का उल्लेख किया है। जब मैं रूस में था तो मुझे एक साथी श्री श्रीकान्त जेना, संसदीय मामलों के माननीय मंत्री, से यह संदेश मिला था कि पूरी संभावना है कि कांग्रेस अपना समर्थन वापिस ले लेगी। मैंने उनसे कहा, "मैं वापिस आ रहा हूं। अगर वे अपना समर्थन वापिस ले रहे हैं तो आपको चिन्ता क्यों हो रही है। आखिरकार, जब तक मैं इस पद पर आसीन हूं, मुझे अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करना चाहिए, चाहे मैं पद पर रहूं या नहीं।"

मैं भाग्य में विश्वास रखता हूं। स्वर्गीय श्री नीलम संजीव रेड्डी जी को 1969 में पद से हटाया गया था। वे 1978 में पुन: उस पद पर आसीन हुए। उन्होंने 1980 में श्रीमती इंदिरा गांधी जी को इस पद की शपथ दिलाई थी। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने हमें समय के बारे में कहा था।

मैं भारतीय राजनीति से दूर नहीं भाग रहा हूं। हो सकता है मैं इस सदन में सफल न समझा गया होऊं। मुझे कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा एक अक्षम प्रधानमंत्री का नाम दिया गया है परन्तु अंतिम निर्णय राष्ट्र के समक्ष है और 95 करोड़ लोग आज हमें देख रहे हैं। एक अक्षम प्रधानमंत्री इस चुनौती को स्वीकार करता है। मैं जनता के समक्ष जाऊंगा और मैं कहीं भाग नहीं रहा हूं।

तीन समूह हैं। भाजपा भी कोई एकमात्र बड़ी पार्टी नहीं है। श्री वाजपेयी जी के लिए मेरे मन में बहुत आदर है। वे वरिष्ठतम नेता है। जब मैं उनसे मिला तो मैंने उनसे केवल बजट को पारित करने में हमारी मदद करने का अनुरोध किया था।

ऐसा इसलिए कि मैं इसके बारे में बहुत चिंतित हूं। हमने कई नए कार्यक्रम शुरू किए हैं। पहली बार एक अक्षम प्रधानमंत्री ने कई कार्यक्रम शुरू किए है। गंदी बस्तियों की सफाई के लिए हमने 330 करोड़ रुपये प्रदान किए हैं। गत वर्ष उन्होंने इस कार्यक्रम के लिए 250 करोड़ रुपये खर्च किए थे। मैं भी राजनीति में हूं। मैं कोई नया आदमी नहीं हूं। केन्द्रीय बजट में जब गंदी बस्तियों के लिए धन का आबंटन किया गया था तब हमने कई कार्यक्रम शुरू किए थे। कल्याण मंत्री यहां उपस्थित हैं। कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष कल्याण मंत्री भी थे। मैं यह बात सुनिश्चित करने के लिए काफी उत्सुक हूं कि चाहे मैं पद छोड़ दूं फिर भी लोगों को लाभ मिलना चाहिए।

[श्री एच.डी. देवेगौड़ा]

हमने सब्सिडाइज्ड फूड कार्यक्रम शुरू किया है। मैं समझता हूं कि यह सार्वजनिक वितरण प्रणाली तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश जैसे तीन चार राज्यों में ही चल रही है। हमने एक राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया है जिसके लिए हमने इस साल के बजट में 7,500 करोड़ रुपये प्रदान किए हैं। क्या यह एक गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम नहीं है? जिन वरिष्ठ नेताओं ने आज बोला उन सभी ने यही पूछा कि उन्होंने बजट पारित करने से पहले 30 मार्च का दिन ही क्यों चुना? वे अपना समर्थन वापिस करने का निर्णय बजट पारित होने के बाद, महिला आरक्षण विधेयक पारित होने के पश्चात - जिस पर मेरी बहनें मुझ पर आरोप लगा रही थीं, लोकपाल विधेयक पारित होने के पश्चात् 9 या 10 मई को ले सकते थे। मैं क्या कर सकता हूं? अगर वे अपना समर्थन 10 मई को वापिस लेते तो कोई विपत्ति नहीं आ जाती। आपको इससे क्या मिला। मैंने ऐसा कौन सा पाप किया है?

महोदय, जब मैं इसी सदन में बैठा था, तो भूतपूर्व वित्त मंत्री श्री मनमोहन सिंह जी ने इसी जगह यह कहा था कि हम किसानों को सब्सिडी नहीं दे सकते। उन्होंने कहा कि सब्सिडी को तीन वर्षों में चरणबद्ध कार्यक्रम द्वारा हटा दिया जाएगा। उन्होंने यह इसी सदन में कहा था। मैंने उस स्थान से बहस की थी। जब मैं उस स्थान से बहस कर रहा था, तो उस समय श्री शिवराज पाटिल इस सदन के अध्यक्ष थे। उन्होंने कहा, "आगामी तीन वर्षों में हम एक चरणबद्ध कार्यक्रम के अंतर्गत हम सब्सिडी को समाप्त करने वाले हैं क्योंकि मुझे वित्तीय घाटे के बारे में सोचना है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ऐसा करने के लिए कह रहा है।" जो कुछ उन्होंने उर्वरक सब्सिडी के बारे में इस सदन में कहा था वह कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित किया गया है। संसद आने से पहले पन्द्रह दिनों के अंदर मैंने अपने किसानों को 2,500 करोड़ रुपये प्रदान करने का निर्णय लिया था। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि हम विश्वासघात करने वाले हैं? यह आपका ख्याल है। अपने किसानों की समस्याओं के बारे पूरी जानकारी रखते हुए मैं आज आपसे यह कहना चाहता हूं कि वे समाज का एक शोषित वर्ग है। मैं इसे इसलिए जानता हूं क्योंकि मैं समुदाय से आया हूं और यह कोई जाति नहीं है। यह एक वर्ग है। इस वर्ष हम कुछ और आगे बढ़े हैं, हमने इस वर्ग के लिए खाद्य सब्सिडी और उर्वरक सब्सिडी सहित लगभग 17,500 करोड़ रुपये प्रदान करने की कोशिश की।

महोदय, इस सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत 32 करोड़ लोगों को लाया जा रहा है। क्या यही पाप मैंने किया है? मेरे विरुद्ध यह आरोप लगाया गया है कि इस प्रधानमंत्री ने गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम की तरफ ध्यान नहीं दिया है। अपने दिल पर हाथ रखकर विश्वास प्रस्ताव के विरुद्ध वोट दो। अपने दिल पर हाथ रख कर कोई निर्णय लो।

अगर मैंने राष्ट्र के साथ विश्वासघात किया है तो वे चाहे मुझे फांसी लगा दें मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। आपको पूरा अधिकार है।

महोदय, अल्प संख्यकों जिन्हें उन्होंने वोट बैंक के रूप में प्रयोग किया है - के बारे में मैंने माननीय वित्त मंत्री जी से इस वर्ष कम से कम 100 करोड़ रुपये प्रदान करने का अनुरोध किया था। उन्हें ऊपर उठाना इतना आसान नहीं है और हम उन्हें इस स्थिति में छोड़ने वाले नहीं है। श्री अंतुले जी ने इस सदन में यह शपथ ली थी की वे समर्थन वापिस नहीं लेने वाले हैं और मेरा साथ देंगे। वे पार्टी के व्हिप के अनुसार कार्यवाही कर सकते हैं; मैं उनकी कोई गलती नहीं निकाल रहा। उन्होंने अपनी सही भावनाओं को व्यक्त किया है।

हमने पहली बार उन लोगों का ध्यान रखा है जिनका जनजातीय क्षेत्रों में बिल्कुल ध्यान नहीं रखा जाता रहा था। वहां साक्षरता दर दो से कम या ढाई प्रतिशत है। श्री भूरिया जी यहीं कहीं बैठे हैं; वे उनके प्रतिनिधि हैं और वे मुझे जनजातीय लोगों की संगोष्ठी में ले गए थे। उनका कहना है कि मैंने कांग्रेस को हाशिए में ला दिया है। मैंने वित्त मंत्री जी को कहा कि कम से कम 250 आवासीय स्कूल खोले जाएं। क्या यही पाप मैंने किया है जिसके लिए वे मुझे सजा देना चाहते हैं।

मैंने श्री नरसिंहा राव जी को कहा कि जब भी उन्हें लगे कि उनकी पार्टी सही स्थिति में है तो वे मुझे कह सकते हैं और मैं उन्हें त्याग पत्र दे दूंगा। मैं झगड़ा नहीं करना चाहता था। वे इस समय सदन में भी बैठे हैं। मैंने श्री केसरी जी को भी कहा था कि वे बार-बार सहयोग वापिस लेने की बात न करें; जब भी उन्हें लगता है कि उनकी पार्टी सत्ता में आने की सही स्थिति में है तो वे मुझे कह सकते हैं और मैं उन्हें त्याग पत्र दे सकता हूं। परन्तु वे मेरे विरुद्ध इस प्रकार का आरोप क्यों लगाते हैं? वे मुझसे यह कह सकते थे, "श्री गौड़ा जी, हम समर्थन वापिस लेना चाहते हैं।" अगर उन्होंने एक भद्र पुरुष की तरह कहा होता तो मैं अपने सदस्यों से इस मामले को आगे न बढ़ाने के लिए कहता और हम इस अध्याय को यहीं समाप्त कर देते।

सबसे पहले यह बताइए क्या मैंने उनका समर्थन मांगा था? उन्होंने 12 तारीख को, कांग्रेस (आई) कार्यकारी समिति ने बिना किसी के कहे और बिना किसी के अनुरोध के स्वयं ही एक निर्णय ले लिया था, हमें सहयोग देने का निर्णय ले लिया था। उस दिन उन्होंने राष्ट्र को बताया कि वे किसी जातीय दल को सत्ता

में आने की अनुमति नहीं देंगे। परन्तु आज उन्होंने क्या किया? उनके निर्णय का क्या परिणाम है?

अब वे एक नए नेता की तलाश कर रहे हैं। क्या आप संयुक्त मोर्चा सरकार को विभाजित करना चाहते हैं? जब वे मुझसे कांग्रेस पार्टी को विभाजित न करने की बात कहते हैं तो उनका यह नैतिक अधिकार कैसे हो जाता है कि वे मेरी संयुक्त मोर्चा सरकार को विभाजित करें? वे सीधे यह कह सकते हैं कि इसी स्थिति के कारण ऐसा कर रहे हैं। हां, श्री वाजपेयी जी ने कहा था कि हम चुनाव करवाएंगे। इसके लिए कौन जिम्मेवार है। अगर उनमें नैतिक साहस होता तो उन्हें यह बात इस सदन में कहनी चाहिए थी। उन्हें गंदी राजनीति नहीं खेलनी चाहिए। क्या वे हरेक से अलग-अलग संपर्क करना चाहते हैं? वे कहते हैं कि अब संयुक्त मोर्चा सरकार का पतन हो गया है और वे इसके हरेक सदस्य को इकट्ठा करने की कोशिश करेंगे; वे उन्हें एक चुंबकीय शक्ति की तरह आकर्षित करना चाहते हैं, मान लो संयुक्त मोर्चा सरकार उस चुंबकीय शक्ति से आकर्षित होने के लिए तैयार ही हो।

अगर उनमें नैतिक साहस है तो हम लोगों के सामने जाने तथा उनकी बात मानने को तैयार हैं। वे उन्हें बता सकते हैं कि उन्होंने क्या किया। वे उन्हें बता सकते हैं कि देवेगौड़ा की सरकार एक धर्म निरपेक्ष सरकार नहीं है। यह एक अक्षम सरकार है। वे लोगों के पास जा सकते हैं। वे नए नेता का चुनाव क्यों करना चाहते हैं? वे आज खोज कर रहे हैं मान लो उन्हें रक्षा मंत्री में कोई नया गुण दिख गया हो।

रात्रि 11.00 बजे

क्या आपने मेरे रक्षा मंत्री में नए गुण देखे हैं? आप हमें तोड़ना चाहते हैं। यह संभव नहीं है। हम आपकी रणनीति समझ गए हैं। यह एक राजनैतिक रणनीति है। हम इसको समझ चुके हैं।

हमें पूरे दिल से यह बात मान लेनी चाहिए कि आपने गलती की है। अगर मैंने कोई गलती की है तो लोग मुझे सजा दे सकते हैं। मैं इस देश के लोगों के अंतिम राजनैतिक फैसले को सुनने के लिए तैयार हूं। हां, मैं बार-बार चुनाव करवाने से होने वाले वित्तीय भार को समझ सकता हूं। मैं यह समझ सकता हूं कि इससे होने वाली वित्तीय देयता क्या होगी। परंतु यह मुद्दा थोपा गया है। आपने इस मुद्दे के द्वारा हमें चुनाव करवाने के लिए मजबूर कर दिया है। हम चुनाव नहीं करवाने वाले थे। अब आप मुझे एक अक्षम और एक ऐसा प्रधानमंत्री कहकर फांसी देना चाहते हैं जो धर्मनिरपेक्षता में विश्वास न रखता हो। तो, ठीक है। परंतु आप किसी अन्य व्यक्ति की खोज करना चाहते हैं।

मैं श्री बाला साहेब ठाकरे से मिला हूं। श्री अंतुले जी आपने कहा था कि मैं उनके राजदूत के रूप में काम करने वाला हूं। श्री वाजपेयी जी मैं भी एक राजनैतिक भाषण दे सकता हूं। आप हमें यह बताना चाहते हैं कि किसी गठबंधन सरकार में कैसे काम किया जाता है? मैं कह सकता हूं कि एक वर्ष पहले उत्तर प्रदेश में मायावती सरकार का क्या हुआ? राजनैतिक नैतिकता की बात मत कीजिए। इस देश की प्रत्येक राजनैतिक पार्टी सत्ता में आने के लिए अधिक उत्सुक है। ...*(व्यवधान)*

हां, मैं कर्नाटक में मुख्यमंत्री पद के लिए लड़ा था। मैं कोई राजनैतिक संयासी नहीं हूं। परंतु मैंने कभी इस पद पर आने के लिए कभी अकांक्षा नहीं की थी। मैं सच्चाई नहीं छिपाना चाहता। अगर आप सभी निष्ठावान हों तो कोशिश करके देख लें।

हम एक राजनैतिक ताकत हैं। हममें से कौन सी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी नहीं है। क्या जनता दल एक राष्ट्रीय पार्टी नहीं है। क्या सी.पी.आई. एक राष्ट्रीय पार्टीय नहीं है। क्या सी.पी.आई.(एम.) एक राष्ट्रीय पार्टी नहीं है? भाजपा एक राष्ट्रीय पार्टी है जिसका चार-पांच राज्यों में प्रभाव है। बादल ग्रुप के बिना पंजाब में भाजपा की स्थिति क्या है? श्री चन्द्र शेखर जी कृपया बताइये कि वास्तविकता क्या है? आप अपने निष्ठावान मित्रों को बचाना चाहते हैं। परंतु इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। जब हम सभी वर्गों से संपर्क कर रहे हैं तो आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपको इतना लगाव है। इसमें चिंता की कोई बात नहीं है। अगर मेरे भाग्य में होगा कि मैं भारतीय राजनीति की धूल से फिर उठूं तो मैं दुबारा इसी ताकत से वापिस आऊंगा। मैं यही साबित करना चाहता हूं।

मैं किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं डरता जो धौंस वाली राजनीति का खेल खेलना चाहता है। मैं बाहर से बहुत ही नम्र व्यक्ति हो सकता हूं परंतु जब मैं लड़ाई शुरू करता हूं तो मैं दिखा देता हूं कि मैं क्या हूं, जैसा कि मैंने कर्नाटक में दिखाया था। अब, मैं यह दिखाना चाहता हूं कि देवेगौड़ा संयुक्त मोर्चा के सहयोग के साथ क्या है? कोई इसमें दरार डालना चाहता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर इसमें दरार आ जाती है तभी वे आगे बढ़ सकते हैं क्योंकि वे ही एकमात्र वैकल्पिक पार्टी हैं। परंतु हम उन्हें दरार नहीं डालने देंगे। आप भी इकट्ठा होइए और लड़िए। श्री राजेश पायलट जी, अगर एक निष्ठावान पार्टी कार्यकर्त्ता के रूप में आप रक्षा करना चाहते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। कोई आपसे पूछ रहा था कि आपने जो मुझे पत्र लिखा है वह क्या था? मुझे पता है कि आपके पास वह कहने का साहस है और आपने वह कहा था परंतु मैं उसके ब्यौरे जानना नहीं चाहता।

[श्री एच.डी. देवेगौड़ा]

अब सवाल यह है कि किन परिस्थितियों में मैं प्रधानमंत्री बना था। एक तरफ सी.बी.आई. की जांच चल रही थी। ...*(व्यवधान)*

एक तरफ सी.बी.आई. की जांच चल रही थी।

कर्नल राव राम सिंह (महेन्द्रगढ़) : कौन सी जांच? ...*(व्यवधान)*

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : कई मामले हैं। मैं उनके ब्यौरों में नहीं जाना चाहता। मेरे पास सभी ब्यौरे हैं। ...*(व्यवधान)* मैंने किसी भी मामले की जांच के लिए सी.बी.आई. को आदेश नहीं दिया है। मैंने पिछले दस महीनों के दौरान किसी भी राजनेता के विरुद्ध किसी भी मामले का आदेश नहीं दिया है। ये सभी पिछले मामले थे। ...*(व्यवधान)*

कर्नल राव राम सिंह : प्रधानमंत्री जी, श्री राजेश पायलट के उस पत्र में क्या है?

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : मैं प्रत्येक मामले के ब्यौरो में नहीं जाना चाहता। मैं इस माननीय सदन को और इस सदन के माध्यम से राष्ट्र को यह बताना चाहता हूं कि पिछले दस महीनों में मैंने किसी के विरुद्ध कोई आदेश पारित नहीं किया, या कोई जांच नहीं करवाई या सी.बी.आई. द्वारा जांच नहीं करवाई। परंतु मैंने कोई हस्तक्षेप नहीं किया। मैं केवल इतना कह सकता हूं कि मैंने कोई हस्तक्षेप नहीं किया है। सदन को यही आशा रही है। अपने मुख्यमंत्री काल में भी मैंने किसी मामले में हस्तक्षेप नहीं किया। इससे मेरी अपनी पार्टी की प्रतिष्ठा का सवाल है। सभी बातें ठीक हो रही हैं या नहीं मैं इस पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। मुझे साफ सुथरी छवि पेश करनी चाहिए। कांग्रेस पार्टी से किसी ने सी.बी.आई. की जांच के बारे में मुझसे नहीं पूछा, ऐसा मैं नहीं कह रहा हूं।

30, 30, 30 ये 30 क्या है? कुछ अखबारों में इसे 4, 4 और 30 लिखा गया है। 4 और 30 ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह 4 क्या है?

... *(व्यवधान)*

श्री एच.डी. देवगौड़ा : जब मामला न्यायालय में है तो मैं कोई ब्यौरे नहीं देना चाहता। मैं इस स्थिति में कुछ नहीं कहूंगा। ...*(व्यवधान)*। चूंकि यह मामला न्यायालय के समक्ष है इसलिए मैं न्यायालय के इस मामले पर कोई विवरण या ब्यौरे नहीं देना चाहता। उससे पहले तो सरकार ही चली जाएगी। मैं क्या कर सकता हूं? किन परिस्थितियों में मुझे प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी उठाने के लिए कहा गया है?

जब मैं श्री नरसिंहा राव जी से मिलने गया तो उन्होंने कहा, 'आपने बहुत बड़ा काम स्वीकार किया है। यह बहुत कठिन काम है।' यह उन्होंने अनुभव के आधार पर कहा था। उन्होंने वह सलाह दी थी मैं उनकी बात से सहमत हूं। मैं पूरी तरह से सहमत हूं। मुझे सहयोगी दलों द्वारा कोई समस्या नहीं है। हां चाहे एकजुट रहने की जिज्ञासा नहीं है, मैं भी सहमत हूं। यह भी एक आरोप है। मंत्रियों के बीच एकजुट रहने की प्रवृत्ति नहीं है। क्या पिछले पांच वर्षों में उनके बीच ऐसी प्रवृत्ति थी, श्री राजेश पायलट जी?

श्री राजेश पायलट : मैंने इस बारे में कुछ नहीं कहा ...*(व्यवधान)*

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : आप गृह मंत्रालय में आंतरिक सुरक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री थे। मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता। मैं इस बारे में यहीं बात समाप्त करना चाहता हूं। ...*(व्यवधान)*

माननीय अध्यक्ष जी ने भी वह टिप्पणी की थी। मैं इसे स्वीकार करता हूं। अगर उस उच्च पद पर आसीन होकर वे ऐसा कहते हैं तो हमें अपने सिर झुकाने पड़ेंगे। उन्होंने मुझे सलाह दी थी। अगर एक पार्टी में आपको ऐसी बातें दिखाई देती हैं तो मुझे तो 13 पार्टियां संभालनी पड़ती हैं। आपको कुछ छूट तो देनी चाहिए। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवस्था बनाए रखें।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : श्री जार्ज फर्नांडीज बैठे हुए हैं। वे मेरे पुराने मित्र हैं। आज मैं सोच रहा था कि आप बोलेंगे, परंतु आपने श्री नीतीश कुमार जी को बोलने का मौका दे दिया। आप अपने पुराने मित्र की आलोचना नहीं करना चाहते। कम से कम आपने इतनी शिष्टता तो दिखाई।

महोदय, एक तरफ तो एन्फोर्समेंट निदेशालय है। महोदय, आज न्यायालय ने यह फैसला दिया है कि जांच एजेंसी न्यायालयों को सीधे रिपोर्ट करें। अगर किसी को मुझ पर संदेह है तो मैं क्या कर सकता हूं? श्री संतोष मोहन देव जी मुझे सलाह दें। एक तरफ जनसंचार माध्यम कहता है कि देवेगौड़ा जी श्री नरसिम्हाराव के घर में 28 बार गए; देवेगौड़ा जी भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश के घर आधी रात, 2 बजे गए थे। पिछले दस महीनों में मुझे यह सभी बातें सुनकर बड़ा आनन्द आया। ...*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : आपको इन बातों से आनंद कैसे आया। ...*(व्यवधान)*

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : आपके समर्थन वापिस लेने से मुझे कोई दुख नहीं है। परीक्षाकाल समाप्त होने के पश्चात, हम अपने

विचारों के आदान-प्रदान के लिए केंद्रीय कक्ष में मिलेंगे। पहले तीनों दलों की परीक्षा हो जाए।

महोदय, सभी 21 तारीख को लेखानुदान और वित्त विधेयक पारित करने पर सहमत हो गए। इन दस दिनों में कोई राजनैतिक दिखावा न करें। ऐसा करने की कोशिश भी न करें। मैं भी उन्हें वचन दूंगा कि उनकी कोई जरूरत नहीं है। बस बहुत हो गया।

इस देश के प्रधानमंत्री को, चाहे कोई भी हो, एक बार उसके पद की मान और मर्यादा चली जाए तो उसे किसी की दया पर प्रधानमंत्री बने नहीं रहना चाहिए। हमें अब और क्या चर्चा करनी है। श्री गुजराल जी आप किस साहस के साथ बाहर जाना चाहते हैं? कोई आपकी ओर उंगली उठा रहा है। आप वरिष्ठतम नेता हैं। मैं यह बात स्वीकार करता हूं पर इन परिस्थितियों में नहीं! *...(व्यवधान)*

श्री इंद्र कुमार गुजराल : मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : इस देश के प्रधानमंत्री की जो 95 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। जब वह बाहर जाता है तो उसका देश के प्रधानमंत्री के रूप में कुछ मान सम्मान होना चाहिए न कि इस तरह का पट्टे पर दिया गया जीवन, मैं ऐसा नहीं चाहता। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अपने सारे सहयोगियों से अपील करता हूं कि मैंने आपके साथ विश्वासघात नहीं किया है। मैंने देश के साथ कभी विश्वासघात नहीं किया है। पिछले दस महीनों में मैंने अपनी सरकार के विरुद्ध भ्रष्टाचार के किसी भी मामले का आरोप नहीं लगने दिया। लोगों के सामने पूरे साहस और विश्वास के साथ जाइए। पैसा ही कोई मापदंड नहीं है। मैंने इन दस महीनों में किसी उद्योगपति से किसी तरह का कोई घोटाला करने को नहीं कहा।

महोदय, मुझे विश्वास है। मुझे भाग्य में विश्वास है।

अंत में, मैं गीतांजलि से उदाहरण देना चाहूंगा। मैं पहली बार उद्धरण दे रहा हूं। श्री चिदंबरम जी ने तमिल में हमेश थिरुकुराल का उद्धरण दिया है।

यह गीतांजलि से है।

"लीव दिस चैंटिंग एण्ड सिंगिंग एण्ड टेलिंग आफ बीड्स!

हूम दो दाओ वरसिप इन दिस लोनली डार्क कॉर्नर आफ ए टेम्पल विथ डोर आल शट?

ओपन दाइन आइस एण्ड सी दाए गाड इज नोट बिफोर दी।"

भगवान इसे स्वीकार नहीं करेंगे। *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री गढ़वी जी, आपको अपना ज्ञान दिखाने की कोई जरुरत नहीं।

... (व्यवधान)

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : माननीय सदस्यों मैं केवल अपने लिए ही बोल रहा हूं। *...(व्यवधान)*

कृपया इंतजार करें। इतनी जल्दी न मचाएं *...(व्यवधान)*

"वह वहां है जहां किसान सख्त जमीन खोद रहा है और जहां रास्ता बनाने वाला पत्थर तोड़ रहा है। वह धूप और वर्षा में उनके साथ है और उसके कपड़े धूल से सने हैं। अपना धार्मिक लबादा उतार दो और उसकी तरह धूल वाली जमीन पर उतर आओ।"

इस सरकार ने कई योजनाएं शुरू करके लोगों का ख्याल रखा है। मैं भगवान को नहीं देख सकता। मुझे वह आध्यात्मिक शक्ति नहीं मिली है। मैं एक साधारण सा मानव हूं। मैं भगवान को अपने लोगों के माध्यम से देख सकता हूं जो इस देश में सबसे अधिक पीड़ित है। मेरा सिद्धांत, 'जनता जनार्दन' है। मैं इसी के लिए काम करूंगा। वे किस तरह के लोग हैं?

"अपनी साधना से बाहर आओ और अपने फूलों और अगरबत्ती को अलग रख दो! क्या होगा अगर तुम्हारे कपड़े फट जाएं और गंदे हो जाएं? उससे मिलो और खेती में उसके साथ रहो और अपना पसीना बहाकर देखो?"

यही मेरी धारणा है। मैं औरों को प्रलोभन नहीं देना चाहता। मेरे पूरे जीवन का उद्देश्य उन लोगों की सेवा करना रहा है जिन्हें पिछले 50 वर्षों से अनदेखा किया गया है। श्री चन्द्रशेखर जी ने पदयात्रा की थी। उन्हें इस सदन में बजट प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं दी गई थी। उन्होंने 3,500 किलोमीटर की पदयात्रा की थी। परंतु मैंने अपना मौका नहीं खोया। मैं जानता था कि मेरे ऊपर तलवार लटक रही है। जो कुछ मैं हूं मैं उसे साबित करना चाहता था। यह सब मेरे साथी, वित्त मंत्री जी के सहयोग से साबित किया जा चुका है और मैंने इसी प्रकार किया है। इसको लागू किया जाना इस सदन का काम है। अगर प्रत्येक सहयोग करेगा, जैसा कि उन्होंने वित्त विधेयक पारित करने पर अपनी सहमति दी है तो मैं आभारी रहूंगा।

मैं आप सभी का और इस देश का फिर एक बार धन्यवाद करता हूं। जब इस मुद्दे को जल्दबाजी में निर्णय लेकर लागू किया था तो हमारे पास कोई विकल्प नहीं था। देश बोल रहा था। मैं इस बात से सहमत हूं कि हमने सारी समस्याओं का समाधान नहीं

[श्री एच.डी. देवेगौड़ा]

किया है। हम दस महीनों के समय में कुछ करना चाहते थे। कम से कम देश ने संभावित स्थिरता महसूस करनी शुरू कर दी थी। देश आगे बढ़ने वाला ही था परंतु दुर्भाग्य से ऐसा हो गया है।

इसके अलावा इस सरकार का विश्वास निवेशकों में बनाए रखने के लिए पिछले साल 30 दिसंबर को हमने सभी उद्योगपतियों को आमंत्रित किया था। हमने वित्तीय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया था। मैं मुंबई गया था। मैं निवेशकों से मिला था। उनकी पार्टी के मुख्य मंत्री वहां थे। दस महीनों के दौरान इस सरकार के प्रशासन में मैंने कोई भेदभाव नहीं किया था। मैंने सभी परियोजनाओं को पूरा किया, चाहे कोई राज्य हो या देश में कोई राजनैतिक दल। पिछले दस महीनों में लगभग 500 परियोजनाएं पूरी की गई। जिसमें लगभग सात बिलीयन डॉलर खर्च हुआ।

क्या यही पाप मैंने किया है। दस महीनों में हमने 118 नई चीनी मिलों को लाइसेंस दिए। मैं कई ऐसे फैसलों का उदाहरण दे सकता हूं जिनका एकमात्र उदेश्य यही था कि यह देश अब अपनी दुर्दशा से बाहर आए और देश की प्रगति में तीव्रता आए। इसी पृष्ठभूमि के साथ हमने निर्णय लिया है।

महोदय, मैं एक बार फिर कांग्रेस (आई) सहित सभी सदस्यों का धन्यवाद करना चाहता हूं जिन्होंने इन दस महीनों में मुझे कुछ करने के लिए सहयोग किया।

मैं इतना बड़ा आदमी नहीं था। परंतु भाग्य मुझे यहां ले आया है। मैं संतुष्ट हूं। इन दस महीनों के दौरान मैंने अपने लोगों, अपने देश और यहां तक कि अपने सहयोगियों के साथ विश्वासघात नहीं किया है। महोदय, आज आपके सहयोग से और इस पूरे सदन के सहयोग से जो कुछ सेवा मैं कर सकता था वह सेवा मैंने इन दस महीनों में की है।

मैं जनसंचार माध्यम से जुड़े लोगों को भी अपना धन्यवाद देना चाहता हूं। कांग्रेस (आई) द्वारा संयुक्त मोर्चा सरकार से समर्थन वापिस लेने के बाद क्षेत्रीय समाचार पत्रों सहित सभी समाचार पत्रों ने इस सरकार की उपलब्धियों का कम से कम सही चित्रण करने की कोशिश की है। इसलिए, मैं संचार माध्यम से जुड़े इन लोगों को अपना आभार और धन्यवाद प्रकट करना चाहता हूं। उपाध्यक्ष महोदय जी इन दस महीनों में मुझे पूरा सहयोग देने के लिए मैं आपका और प्रत्येक व्यक्ति का धन्यवाद करना चाहता हूं।

अंत में, विश्वास प्रस्ताव के संबंध में विवेक के साथ कोई निर्णय लेना इस सदन का काम है।

***अध्यक्ष महोदय** : आप बैठ क्यों नहीं जाते? आप अपने स्थान पर बैठें। अपने-अपने स्थानों पर आप थोड़ी देर बाद जाना। अभी नहीं।*

... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है? आप चुप क्यों नहीं होते? अब मैं श्री एच.डी. देवेगौड़ा द्वारा पेश किये गए प्रस्ताव को सभा में मतदान के लिए रखता हूं। प्रश्न यह है :

"कि यह सभा मंत्रि-परिषद् में अपना विश्वास व्यक्त करती है।"

जो सदस्य इस प्रस्ताव के पक्ष में हैं वे कहें 'हां'

कुछ माननीय सदस्य : 'हां'

अध्यक्ष महोदय : जो इसका विरोध करना चाहते हैं, वे कहें 'नहीं'

कुछ माननीय सदस्य : 'नहीं'

अध्यक्ष महोदय : मुझे लगता है, 'हां' कहने वाले अधिक हैं।

कुछ माननीय सदस्य : नहीं, 'नहीं' कहने वाले अधिक हैं।

श्री संतोष मोहन देव : महोदय, कुछ सदस्यों के पास अपनी विभाजन संख्या नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : हां, मुझे पता है। मैं उनकी घोषणा करूंगा। इसका ध्यान रखा जाएगा।

दीर्घाएं खाली होने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : दीर्घाएं खाली कर दी गई हैं। सबसे पहले, जिन सदस्यों को अभी विभाजन संख्या आबंटित नहीं की गई है, उन्हें यह बताना चाहूंगा कि उन्हें पर्चियां दी जाएंगी। हमारे पास उनके नाम हैं।

रिकार्डिंग मशीन को कैसे संचालित करना है, इसके बारे में मैं निर्देश दूंगा। मत-विभाजन शुरू होने से पूर्व प्रत्येक सदस्य को अपनी ही सीट पर होना चाहिए और प्रणाली का संचालन अपनी सीट से करना चाहिए। सदस्य को अपना वोट देने के लिए अपनी सीट से दो बटन दबाने होंगे। इनमें से एक बटन सदस्य की सीट के सामने रेलिंग पर लगा है। कृपया इसे जांच लें। इसे 'वोट इनिसिएशन स्विच' कहते हैं। मुझे लगता है आपने इसे जांच लिया होगा। एक सदस्य को अपनी सीट के सामने लगे तीन बटनों में से एक दबाना होगा यदि 'हां' तो हरा; यदि 'नहीं' तो लाल और